PHILOSOPHY

B.A. (Hons.), Paper III (Part II)

Nature of Ethics (नीतिशास्त्र का स्वरूप)

Dr. S. K. Singh
Mob - 9431449951

→ नीतिशास्त्र का अर्थ :-

→ अंग्रेजी में नीतिशास्त्र का समानार्थक शब्द 'इथिक्स (Ethics)' है। 'Ethics' ग्रीक शब्द 'Ethica' से व्युत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है - रीति-रिवाज, प्रचलन या आदत। इसे नीति-विज्ञान (Science of Morality) भी कहा जाता है।

→ नीतिशास्त्र या आचारशास्त्र के लिये 'मोरल फिलॉसफी (Moral Philosophy)' शब्द का प्रयोग होता है। 'मोरल' शब्द लैटिन भाषा के 'मोरस (Mores)' शब्द से व्युत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है - रीति-रिवाज, प्रचलन, आदत या अभ्यास।

→ इस प्रकार नीतिशास्त्र का शाब्दिक अर्थ है - मनुष्य के रीति-रिवाजों, आदतों या अभ्यासों का विज्ञान। यह शाब्दिक अर्थ नीतिशास्त्र के आंशिक स्वरूप को इंगित करता है। इसी दृष्टिकोण से परम्परा के अनुकूल कार्यों को नैतिक और उसके प्रतिकूल कार्यों को अनैतिक माना जाता है।

→ रीति-रिवाजों, प्रचलन या सामाजिक परम्पराओं का विकास मनुष्य के सामाजिक जीवन के विकास के साथ-साथ हुआ है। जब से मनुष्य ने पारस्परिक सहयोग से समाज का निर्माण किया और समस्याओं के ~~सम~~ समाधान हेतु प्रयास शुरु किया, तभी से कुछ ऐसे नियमों की आवश्यकता पड़ी जो उसकी तथा दूसरे मनुष्यों की इच्छाओं, रुचियों, आकांक्षाओं, उद्देश्यों तथा स्वार्थों में होनेवाले संघर्ष को कम या समाप्त कर सके तथा जिसका पालन करके वह दूसरों के साथ सुख-शांति एवं सामंजस्य-पूर्ण तरीके से सामाजिक जीवन व्यतीत कर सके। कालांतर में धीरे-धीरे इन्हीं नियमों ने सामाजिक परम्पराओं एवं रीति-रिवाजों का रूप ग्रहण कर लिया जिसका पालन समाज के सदस्य के रूप में ~~प्रत्येक~~ प्रत्येक मनुष्य के लिये आवश्यक समझा जाने लगा। वस्तुतः इन सामाजिक परम्पराओं, रूढ़ियों

Scanned with CamScanner

अथवा रीति-रिवाजों से ही जिस शास्त्र या विज्ञान का विकास हुआ उसे आज हम नीतिशास्त्र या नैतिक दर्शन कहते हैं।

→ वर्तमान में नीतिशास्त्र केवल रीति-रिवाज एवं परम्पराओं तक ही सीमित नहीं है। परम्परा का निर्वहन वहीं तक होना चाहिये जहाँ तक वह मानवता तथा समानता, स्वतंत्रता एवं न्याय के सामाजिक-राजनैतिक आदर्शों के विपरीत न हो। अब नीतिशास्त्र के अन्तर्गत मानवीय क्रिया-कलापों के कारण उत्पन्न समस्याओं का नैतिक समाधान भी ढूढ़ने का प्रयास भी किया जा रहा है। आज नीतिशास्त्र का क्षेत्र व्यक्ति, समाज, शासन, राष्ट्र एवं अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों एवं समाधानों तक विस्तारित हो चुका है।

→ संक्षेप में, नीतिशास्त्र में सामाजिक जीवन व्यतीत करनेवाले सामान्य मनुष्यों के ऐच्छिक कर्मों ~~का~~ (आचरण एवं चरित्र) का कुछ सिद्धान्तों, नियमों एवं मानकों के आधार पर उचित-अनुचित, शुभ-अशुभ के संदर्भ में मूल्यांकन किया जाता है।

→ व्यापक दृष्टिकोण से नीतिशास्त्र मानव आचरण के ~~हर एक पहलू~~ हरेक पहलू का अध्ययन कर यह बताता है कि

(i) क्या उचित और क्या अनुचित है?
(ii) हमें क्या करना चाहिये और क्या नहीं करना चाहिये?
(iii) किसी विशेष परिस्थिति में उचित और अनुचित का निर्धारण कैसे हो,
(iv) क्या नैतिकता के निर्धारण का कोई सार्वभौम मानदंड हो सकता है;
(v) क्या नैतिक नियम कभी-कभी अप्रासंगिक हो जाते हैं?
(vi) क्या नैतिकता के परम्परागत मानदंड अप्रासंगिक हो जाते हैं?
(vii) क्या उचित-अनुचित का निर्धारण परिस्थिति-सापेक्ष है?
(viii) मनुष्य होने के नाते हमारे कर्तव्य क्या हैं तथा इसका निर्धारण किस आधार पर तथा किसके द्वारा किया जा सकता है?
(ix) जब व्यक्ति और समाज के हितों का संघर्ष होता है तो उसे किस उपाय अथवा विधि द्वारा कम या समाप्त किया जाना चाहिये।
(x) क्या मानव के जीवन का कोई परम लक्ष्य अथवा अंतिम साध्य है? यदि हो तो वह परमलक्ष्य क्या है और इसे कैसे प्राप्त किया जाना चाहिये? मानव जीवन के उपरोक्त आधारभूत प्रश्नों तथा ऐसे ही अनेक प्रश्नों पर नैतिक दर्शन व्यवस्थित किया जाता है।

क्रमशः

Scanned with CamScanner